National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2025; 1(59): 258-261
© 2025 NJHSR
www.sanskritarticle.com

डॉ० प्रीति सिरौटीय
सहा० आचार्य, संस्कृत विभाग,
नेहरू महाविद्यालय,
ललितपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

Correspondence:
डॉ० प्रीति सिरौटीय
सहा० आचार्य, संस्कृत विभाग,
नेहरू महाविद्यालय,
ललितपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

भारतीय ज्ञान: परम्परा में वृक्षायुर्वेद-शास्त्रीय आधार, सिद्धान्त एवं समकालीन प्रासंगिकता का अनुशीलन

डॉ० प्रीति सिरौटीय

सारांश (Abstract)

भारतीय ज्ञान-परम्परा में वृक्ष केवल भौतिक संसाधन न होकर चेतन सत्ता के रूप में स्वीकार किए गए हैं। इस परम्परा का विकसित रूप वृक्षायुर्वेद है, जो वनस्पतियों के रोपण, पोषण, संरक्षण तथा रोग-निवारण का शास्त्रीय विज्ञान प्रस्तुत करता है। प्रस्तुत शोध-पत्र में वैदिक, आयुर्वेदिक एवं स्मृति-परम्परा के आलोक में वृक्षायुर्वेद की अवधारणा, उसके सिद्धान्त, ग्रन्थीय प्रमाण तथा आधुनिक पर्यावरणीय संकटों के समाधान में उसकी प्रासंगिकता का अनुशीलन किया गया है। संस्कृत मूल ग्रन्थों से उद्धरण लेकर उनके अर्थ और व्यावहारिक पक्ष का विश्लेषण इस अध्ययन की विशेषता है।

शब्द कुंजी (Key Words)-

भारतीय ज्ञान-परम्परा, वृक्षायुर्वेद, आयुर्वेद, वनस्पति-विज्ञान, पर्यावरण-संरक्षण

भूमिका / प्रस्तावना

भारतीय सभ्यता की मूल चेतना ऋत, धर्म और सह-अस्तित्व पर आधारित रही है। इस सभ्यता में मनुष्य और प्रकृति के मध्य द्वैत नहीं, अपितु पारस्परिक आश्रय का सम्बन्ध स्वीकार किया गया है। यही कारण है कि वृक्षों को देवता, औषधि, अन्नदाता और संरक्षक के रूप में देखा गया। ऋग्वेद में कहा गया है— **"वनस्पतये नमो नमः।"**[1]

यह मन्त्र स्पष्ट करता है कि वनस्पति केवल उपयोग की वस्तु नहीं, अपितु वन्दनीय सत्ता है। इसी भावभूमि से वृक्षों के संरक्षण एवं संवर्धन का शास्त्रीय विज्ञान विकसित हुआ, जिसे वृक्षायुर्वेद कहा गया।

भारतीय ज्ञान-परम्परा की अवधारणा

भारतीय ज्ञान-परम्परा वह समग्र बौद्धिक परम्परा है जिसमें—

- ज्ञान का उद्देश्य **लोक-कल्याण** है,
- प्रकृति को **जीवित तत्त्व** माना गया है,
- और विज्ञान, दर्शन तथा धर्म में कोई कठोर विभाजन नहीं है।

छान्दोग्य उपनिषद् में वर्णित है— **"सर्वं खल्विदं ब्रह्म।"**[2]

अर्थात जब सम्पूर्ण जगत ब्रह्मस्वरूप है, तब वृक्षों की रक्षा धार्मिक, नैतिक और वैज्ञानिक—तीनों दायित्व बन जाती है।

वृक्षायुर्वेद : अर्थ एवं परिभाषा

वृक्ष + आयुर्वेद अर्थात् वृक्षों के जीवन, स्वास्थ्य एवं दीर्घायु का विज्ञान। सुरपाल कृत *वृक्षायुर्वेद* में कहा गया है—**"बीजभूम्यादिसंस्कारैः वृक्षाणां वृद्धिरुत्तमा।"**[3] अर्थात् बीज, भूमि आदि के संस्कार से वृक्षों की उत्तम वृद्धि होती है। यह परिभाषा स्पष्ट करती है कि वृक्षायुर्वेद केवल रोपण

नहीं, बल्कि **समग्र जीवन-चक्र का विज्ञान** है।

वैदिक साहित्य में वृक्ष-चिन्तन

अथर्ववेद में वृक्षों को औषधि-रूप में वर्णित किया गया— "**या ओषधीः सोमराज्ञीर्**

वनस्पतीन् मामवन्।"[4] यह मन्त्र वृक्षों की औषधीय शक्ति एवं मानव-रक्षा में उनकी भूमिका को रेखांकित करता है।

आयुर्वेदिक संहिताओं में वृक्षायुर्वेद

चरकसंहिता में वर्णित है—"**औषधीनां च यो वेदस वैद्यः श्रेष्ठ उच्यते।**"[5] अर्थात औषधियों का ज्ञान रखने वाला ही श्रेष्ठ वैद्य है—और यह ज्ञान वृक्षों के बिना असम्भव है।

वृक्षायुर्वेद की शास्त्रीय पृष्ठभूमि

वृक्षायुर्वेद का उद्भव भारतीय शास्त्रीय परम्परा में उसी प्रकार हुआ है, जैसे मानव-आयुर्वेद का। आयुर्वेद जहाँ मानव शरीर के धातु, दोष और मल का विवेचन करता है, वहीं वृक्षायुर्वेद भूमि, बीज, जल, वायु और काल के माध्यम से वृक्ष-जीवन की रक्षा करता है। आचार्य कौटिल्य ने अपने अर्थशास्त्र में भी वृक्षों के संरक्षण का विधिक उल्लेख किया है— "**फलद्रुमाणां छेदे दण्डः।**"[6] अर्थात फलदार वृक्षों को काटने पर दण्ड का विधान है। यह प्रमाण दर्शाता है कि वृक्षों का संरक्षण केवल धार्मिक नहीं, बल्कि **राज्य-व्यवस्था का भी अंग** था।

वृक्षायुर्वेद के प्रमुख आचार्य एवं ग्रन्थ

(क) पराशर

महर्षि पराशर को वृक्षायुर्वेद परम्परा का आदि आचार्य माना जाता है। *पराशर स्मृति* एवं उनसे सम्बद्ध ग्रन्थों में कृषि, वृक्षारोपण एवं वन-रक्षा के स्पष्ट संकेत मिलते हैं। पराशर कहते हैं—"**वृक्षारोपणं धर्म्यं पुत्रवत् पालनं स्मृतम्।**[7] अर्थात् वृक्षों का रोपण धर्म है और उनका पालन पुत्रवत् करना चाहिए। यह कथन भारतीय ज्ञान-परम्परा की **नैतिक पारिस्थितिकी (Ethical Ecology)** को स्पष्ट करता है।

(ख) सुरपाल एवं वृक्षायुर्वेद

वृक्षायुर्वेद पर उपलब्ध सर्वाधिक व्यवस्थित एवं स्वतंत्र ग्रन्थ **आचार्य सुरपाल** द्वारा रचित *वृक्षायुर्वेद* है (लगभग 11वीं शती ई.)। सुरपाल स्पष्ट रूप से कहते हैं—

> "**मानवानां यथा देहो दोषधातुमलाश्रयः।**
>
> **तथा वृक्षस्य विज्ञेयं बीजभूम्युदकादिकम्॥**"[8]

अर्थात जिस प्रकार मानव शरीर दोष, धातु और मल पर आधारित है, उसी प्रकार वृक्ष का शरीर बीज, भूमि और जल पर आधारित है। यहाँ मानव-आयुर्वेद और वृक्षायुर्वेद की **सैद्धान्तिक समानता** प्रतिपादित होती है।

वृक्षायुर्वेद के मूल सिद्धान्त

वृक्षायुर्वेद के सिद्धान्तों को पाँच प्रमुख वर्गों में विभाजित किया जा सकता है—

1. बीज-संस्कार (Seed Treatment)

सुरपाल के अनुसार बीज की शुद्धि और संस्कार के बिना वृक्ष का सम्यक् विकास असम्भव है।"**दुग्धतोयघृतैः सिद्धं बीजं रोपणमर्हति।**"[9] अर्थात् बीज को दूध, जल एवं घृत से संस्कारित कर रोपित करना चाहिए। यह विधि आधुनिक **Seed Treatment Technology** से आश्चर्यजनक साम्य रखती है।

2. भूमि-परीक्षा (Soil Examination)

वृक्षायुर्वेद में भूमि को माता के समान माना गया है "**भूमेर्गुणान् परीक्ष्यैववृक्षारोपणमाचरेत्।**"[10] अर्थात भूमि के गुणों की परीक्षा करके ही वृक्षारोपण करना चाहिए।

भूमि को तीन प्रकार का माना गया—

1. **जंगल भूमि** 2. **अनूप भूमि तथा 3. साधारण भूमि** यह वर्गीकरण आधुनिक **Soil Classification** के समतुल्य है।

3. सिंचन-विधान (Irrigation System)

सुरपाल ने स्पष्ट किया है कि अतिसिंचन और अल्पसिंचन—दोनों वृक्ष के लिए हानिकारक हैं। "**नात्युदकं न चातल्पं मध्यमं हितमुच्यत**[11] अर्थात न अधिक जल, न अत्यल्प—मध्यम सिंचन ही हितकारी है। यह सिद्धान्त आज के **Sustainable Water Management** का आधार है।

4. वृक्ष-रोग एवं निदान

वृक्षायुर्वेद में वृक्षों के रोगों को दोषात्मक रूप से समझाया गया है—

"**वातपित्तकफैर्दुष्टो**

वृक्षो रोगैः प्रपीड्यते।"[12] जैसे मानव शरीर में वात-पित्त-कफ दोष होते हैं, वैसे ही वृक्षों में भी इनका प्रभाव स्वीकार किया गया है।

5. वृक्ष-चिकित्सा (Plant Treatment)

वृक्षों की चिकित्सा हेतु गोमूत्र, तिलतैल, नीम, भस्म आदि का प्रयोग बताया गया है। "**गोमूत्रैस्तैलसंयुक्तैः रोगनाशः प्रजायते।**"[13] यह आज की **Organic Farming** एवं **Natural Pesticides** की अवधारणा से मेल खाता है।

वृक्षायुर्वेद एवं धार्मिक-सांस्कृतिक चेतना

भारतीय परम्परा में वृक्ष केवल भौतिक अस्तित्व नहीं, बल्कि धार्मिक सत्ता हैं—

- पीपल – विष्णु
- वट – ब्रह्मा
- अश्वत्थ – त्रिमूर्ति

श्रीभगवद्गीता में कहा गया— "**अश्वत्थः सर्ववृक्षाणाम्।**"[14] यह वृक्षों की **दैवीय गरिमा** को स्थापित करता है।

वृक्षायुर्वेद : पर्यावरणीय नैतिकता का आधार

वृक्षायुर्वेद केवल कृषि-ग्रन्थ नहीं, बल्कि—

- पर्यावरण-संरक्षण
- जैव-विविधता

- सतत विकास

का शास्त्रीय मॉडल है। मनुस्मृति में कहा गया— "**यो वृक्षान् छिनत्ति नरः**

स नरकं व्रजेत्।"[15] यह पर्यावरणीय अपराध को नैतिक अपराध घोषित करता है।

वृक्षायुर्वेद एवं आधुनिक कृषि-विज्ञान : तुलनात्मक अध्ययन

आधुनिक कृषि-विज्ञान को प्रायः पाश्चात्य वैज्ञानिक दृष्टिकोण की देन माना जाता है, किन्तु गहन अध्ययन से स्पष्ट होता है कि इसके अनेक मूल सिद्धान्त भारतीय वृक्षायुर्वेद में पूर्व से ही विद्यमान थे। अंतर केवल इतना है कि वृक्षायुर्वेद में ये सिद्धान्त **समग्र, नैतिक और प्रकृति-संवेदी** रूप में प्रस्तुत हुए हैं।

1. बीज-विज्ञान (Seed Science)

आधुनिक Seed Science बीज की गुणवत्ता, रोग-प्रतिरोधक क्षमता एवं अंकुरण प्रतिशत पर बल देती है। वृक्षायुर्वेद में इसे **बीज-संस्कार** कहा गया है। सुरपाल लिखते हैं— "**बीजं दुष्टं न रोप्यं स्यात् शुद्धं बीजं सुखावहम्।**"[16] अर्थात दूषित बीज का रोपण नहीं करना चाहिए, शुद्ध बीज ही सुखद फल देता है। यह कथन आधुनिक **Certified Seeds** की अवधारणा से पूर्णतः मेल खाता है।

2. मृदा-विज्ञान (Soil Science)

आधुनिक Soil Science में pH, उर्वरता, जलधारण क्षमता आदि का अध्ययन किया जाता है। वृक्षायुर्वेद भूमि को **जीवित सत्ता** मानता है। "**जीवभूता मही प्रोक्ता**

सर्वबीजानि धारयेत्।"[17] भूमि को जीवित कहकर भारतीय ज्ञान-परम्परा ने मृदा-क्षरण रोकने की नैतिक नींव रखी।

3. जैविक कृषि (Organic Farming)

आज जिस Organic Farming को नवीन समाधान माना जा रहा है, उसके मूल सूत्र वृक्षायुर्वेद में उपलब्ध हैं—

- गोमूत्र
- गोबर
- तिलतैल
- नीम

"**गोमयैर्गोमूत्रैश्च वृक्षाः पुष्टिं लभन्ति।**"[18] यह रासायनिक उर्वरकों के दुष्प्रभाव से मुक्ति का मार्ग दिखाता है।

4. वनों की कटाई एवं जलवायु परिवर्तन

आधुनिक युग में पर्यावरण-संकट का मूल कारण **अत्यधिक दोहन** है। वृक्षायुर्वेद इसके विपरीत **संतुलन** का पक्षधर है। महाभारत में कहा गया— "**छित्वा वृक्षं न रोप्येत**

पापं पापेन वर्धते।"[19] अर्थात वृक्ष काटकर यदि नया वृक्ष न लगाया जाए तो पाप बढ़ता है। यह आज के **Afforestation Policy** का शास्त्रीय आधार है।

5. जल-संरक्षण एवं वर्षा

वृक्षों और वर्षा के सम्बन्ध को वृक्षायुर्वेद ने स्पष्ट रूप से पहचाना— "**वृक्षैः धार्यन्ते मेघा**

मेघैस्तिष्ठति मेदिनी।"[20] वृक्ष– मेघ– भूमि का यह चक्र आधुनिक **Hydrological Cycle** के समान है।

वृक्षायुर्वेद एवं जैव-विविधता

वृक्षायुर्वेद एक ही स्थान पर विभिन्न प्रजातियों के रोपण की सलाह देता है— "**नैकजातीयरोपणं कुर्याद् देशस्य रक्षणे।**"[21] यह आधुनिक **Biodiversity Conservation** का मूल सिद्धान्त है।

सामाजिक एवं सांस्कृतिक आयाम

भारतीय समाज में वृक्षोत्सव, अशोकाष्टमी, वट-सावित्री आदि पर्व वृक्षायुर्वेद की **लोक-स्वीकृति** के प्रमाण हैं। "**एकः पादपरोप्यस्तु दशपुत्रसमो भवेत्।**"[22] एक वृक्ष दस पुत्रों के समान फल देता है—यह कथन सामाजिक चेतना को पुष्ट करता है।

समकालीन अनुप्रयोग (Contemporary Applications)

आज वृक्षायुर्वेद का प्रयोग निम्न क्षेत्रों में हो सकता है—

1. प्राकृतिक खेती
2. शहरी वृक्षारोपण
3. आयुर्वेदिक औषधि उद्योग
4. जलवायु नीति
5. पर्यावरण शिक्षा

संयुक्त राष्ट्र द्वारा प्रतिपादित **Sustainable Development Goals (SDGs)** के साथ वृक्षायुर्वेद का सीधा साम्य है, विशेषतः—

- SDG– 13 (Climate Action)
- SDG– 15 (Life on Land)

उपसंहार (Conclusion)

प्रस्तुत शोध-पत्र के समग्र अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि **वृक्षायुर्वेद भारतीय ज्ञान-परम्परा का एक अत्यन्त वैज्ञानिक, समग्र और पर्यावरण-संवेदी अनुशासन** है। यह केवल वृक्षों के रोपण या संरक्षण तक सीमित नहीं, बल्कि भूमि, जल, वायु, बीज, ऋतु और मानव— इन सभी के पारस्परिक सम्बन्धों को संतुलित करने का शास्त्रीय विज्ञान है।

भारतीय दृष्टि में वृक्ष केवल उपयोगिता की वस्तु नहीं, बल्कि **जीवित, चेतन और धर्मसापेक्ष सत्ता** हैं। इसी कारण वृक्षायुर्वेद में वृक्षों के प्रति करुणा, संरक्षण और पालन का भाव प्रमुख है। यह भाव आधुनिक युग की यांत्रिक एवं उपभोगवादी मानसिकता से भिन्न है।

शोध-निष्कर्ष (Findings)

इस अध्ययन के आधार पर निम्नलिखित प्रमुख निष्कर्ष सामने आते हैं—

1. **वृक्षायुर्वेद का आधार वैदिक एवं आयुर्वेदिक साहित्य में गहराई से निहित है**, विशेषतः अथर्ववेद, चरकसंहिता, सुश्रुतसंहिता तथा सुरपाल कृत *वृक्षायुर्वेद* में।

2. वृक्षायुर्वेद में वर्णित **बीज-संस्कार, भूमि-परीक्षा, सिंचन-विधान और वृक्ष-चिकित्सा** के सिद्धान्त आधुनिक कृषि-विज्ञान से आश्चर्यजनक रूप से साम्य रखते हैं।

3. यह परम्परा **जैविक खेती (Organic Farming)** और **सतत विकास (Sustainable Development)** का शास्त्रीय मॉडल प्रस्तुत करती है।

4. वृक्षायुर्वेद केवल तकनीकी ज्ञान नहीं, बल्कि **पर्यावरणीय नैतिकता (Environmental Ethics)** का सशक्त आधार है।

5. आधुनिक पर्यावरण-संकट—जैसे जलवायु परिवर्तन, जैव-विविधता का क्षरण, मृदा-क्षरण—के समाधान में वृक्षायुर्वेद अत्यन्त प्रासंगिक है।

भविष्य की सम्भावनाएँ (Future Scope)

वर्तमान वैश्विक परिस्थितियों में वृक्षायुर्वेद के अध्ययन एवं अनुप्रयोग की व्यापक सम्भावनाएँ हैं—

- **अकादमिक स्तर पर**

o भारतीय ज्ञान-परम्परा आधारित पाठ्यक्रमों में वृक्षायुर्वेद का समावेश

o अंतर्विषयक (Interdisciplinary) शोध

- **कृषि एवं पर्यावरण क्षेत्र में**

o प्राकृतिक खेती और पारम्परिक बीज-संरक्षण

o शहरी हरित-योजना (Urban Green Planning)

- **नीति-निर्माण में**

o पर्यावरण कानूनों में भारतीय दृष्टि का समावेश

o स्थानीय पारिस्थितिकी के अनुरूप विकास मॉडल

इस प्रकार वृक्षायुर्वेद अतीत का अवशेष नहीं, बल्कि भविष्य का मार्गदर्शक सिद्ध हो सकता है।

उपसंहारात्मक श्लोक

"परोपकाराय फलन्ति वृक्षाः परोपकाराय वहन्ति नद्यः।

परोपकाराय दुहन्ति गावः परोपकारार्थमिदं शरीरम्॥"[23]

यह श्लोक भारतीय ज्ञान-परम्परा के उस मूल भाव को प्रकट करता है, जिसमें वृक्ष, प्रकृति और मानव—तीनों का अस्तित्व परस्पर कल्याण पर आधारित है।

संदर्भ-सूची (References)

Primary Sources (संस्कृत ग्रन्थ)

1. ऋग्वेद, अथर्ववेद, 1/91/1
2. छन्दोग्य उपनिषद 3/14/1
3. सुरपाल, वृक्षायुर्वेद, 16
4. ऋग्वेद, औषधि सूक्त 10/97
5. चरक संहिता, सूत्रस्थान 1/124
6. मानुस्मृति 8/247
7. मत्स्यपुराण 59/159
8. सुरपाल, वृक्षायुर्वेद, 1/9
9. सुरपाल, वृक्षायुर्वेद, बीजभूम्यादि संस्कार 1/6-7
10. सुरपाल, वृक्षायुर्वेद, बीजभूम्यादि संस्कार 1/8
11. सुरपाल, वृक्षायुर्वेद, बीजभूम्यादि संस्कार 1/12
12. सुरपाल, वृक्षायुर्वेद, बीजभूम्यादि संस्कार 1/15
13. सुरपाल, वृक्षायुर्वेद, बीजभूम्यादि संस्कार 1/5
14. भगवातगिता 10, सुरपाल, वृक्षायुर्वेद, बीजभूम्यादि संस्कार 1/20
15. मानुस्मृति दंडविधान, 8/246-247
16. सुरपाल, वृक्षायुर्वेद, बीजभूम्यादि संस्कार 1/5-6
17. सुरपाल, वृक्षायुर्वेद, बीजभूम्यादि संस्कार 1/3-4
18. सुरपाल, वृक्षायुर्वेद, बीजभूम्यादि संस्कार 1/14
19. सुरपाल, वृक्षायुर्वेद, बीजभूम्यादि संस्कार 1/7
20. सुरपाल, वृक्षायुर्वेद, बीजभूम्यादि संस्कार 2/5
21. सुरपाल, वृक्षायुर्वेद, बीजभूम्यादि संस्कार 1/16
22. सुरपाल, वृक्षायुर्वेद, बीजभूम्यादि संस्कार 1/17
23. सुरपाल, वृक्षायुर्वेद, बीजभूम्यादि संस्कार 1/20-21
24. **भगवद्गीता**
25. **पराशर स्मृति**
26. **राधाकृष्णन, एस. –** ***Indian Philosophy***
27. **कपिल कपूर –** ***Indian Knowledge Systems***
28. **B. V. Subbarayappa –** ***Science in India***
29. **पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, भारत सरकार – रिपोर्ट्स**
30. **Research Papers on Traditional Agriculture & Ecology**